International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारत में महिला सशक्तिकरण एवं शिक्षा : एक समीक्षात्मक अध्ययन

Dr. Jyoti Gupta

Assistant Professor (VSY), Govt. Girls College Shahbad Baran Rajasthan

सार :

आज यह अनुमान लगाया जाता है कि हर साल 6 मिलियन महिलाए गायब होती है इनमें से 23 प्रतिषत कभी पैदा नही होती, और 10 प्रतिषत गायब है प्रारंभिक बचपन मे प्रजनन के वर्षों मे 21 प्रतिषत, और 60 वर्ष से अधिक आयु के 38 प्रतिषत प्रत्यय लापता महिलओं के अलावा कई और महिलाऐं है जो षिक्षा, नौकरी या राजनीतिक जिम्मेदारी प्राप्त करने मे विफल रहती है, महिलाओ के सापेक्ष अभाव और पिछले 20 वर्षो मे जिस हद तक सुधार हुआ है, दोनो ही कई क्षैत्रों मे स्पष्ट है। निम्न और मध्यम आय वाले देषो मे षिक्षा की पहुँच मे माध्यमिक विधालय मे लड़कियों के लिए नामांकन 2010 मे 34 प्रतिषत थी, जबकि लड़को के लिए ये 41 प्रतिषत थी। इस बीच प्राथमिक विधालय मे नामांकन लड़को और लड़कियो दोनो के लिए लगभग सार्वभौमिक हो गया है।

महिला सषक्तिकरण स्वयं विस्तृत करता है कि सामाजिक अधिकार, राजनीतिक अधिकार, एर्गोनामिक स्थिरता, ताकत और अन्य सभी अधिकार दानो लिंग के लिए समान होने चाहिए। भारत के सबसे महान सपुतों मे से एक स्वामी विवेकानंद ने कहा कि पुरूष और महिला के बीच कोई भेद–भाव नही होना चाहिए, श्दुनिया के कल्याण का कोई मौका नही है जब तक कि महिलाओं की स्थिति मे सुधार नही होता है, एक पक्षी के लिए यह सम्भव नही है कि वो केवल एक पंख पर उड़े। भारत को विषाल महिला शक्ति को एक प्रभावी मानव संसाधन मे बदलने की जरूरत है और यह केवल सषक्तिकरण या महिलाओं के माध्यम से ही संभव है भारत सरकार महिला सषक्तिकरण के लिए राज्य और केन्द्र दोनो स्तरो पर विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं चला रही है। सभी राजनीतिक और कार्यक्रम विभिन्न आयु समुह में महिलाओं के सामाजिक आर्थिक और शैक्षिक सषक्तिकरण पर केन्द्रित है।

श्रम बाजार के अवसरो मे महिलओ के काम करने की संभावना कम होती है, व समान काम के लिए पुरूषों की तुलना मे कम कमाती है, और जब वे काम करती है तो उनके गरीबी मे रहने की सम्भावना अधिक होती है। महिलाएं घर के कामकाज पर लगभग दोगुना समय, बच्चो की देखभाल पर लगभग 5 गुना अधिक समय और पुरूषों की तुलना मे बाजार के काम पर लगभग आधा समय बिताती है। राजनीतिक प्रतिनिधित्व में महिलाओं ने जुलाई 2011 मे संसद के नीचले और ऊपरी सदनों के सदस्यों का सिर्फ 19.4 प्रतिषत हिस्सा बनाया। कानुनी अधिकारो में, कई देषों मे महिलाओं को अभी भी जमीन के मालिक होने, सम्पति का प्रबंधन करने, व्यवसाय करने या अपने पति के बिना यात्रा करने की स्वतंत्र अधिकारों का अभाव है। अनुमति।

अर्थव्यवस्थाओं के विकास और महिला सषक्तिकरण के बीच एक द्विदिष संबध है, जिसे विषेष रूप से स्वास्थ्य, षिक्षा अर्जन के अवसर अधिकारो और राजनीतिक भागीदारी मे गटक या विकास तक पहुंचने के लिए महिलाओं की क्षमता मे सुधार के रूप मे परिभाषित किया गया है। एक दिषा मे, अकेले विकास पुरूषों और महिलाओ के बीच असमानताओं को कम करने मे एक प्रमुख भुमिका निभा सकता है, दुसरी दिषा मे महिलाओ के खिलाफ भेदभाद जारी रहता है जैसा कि सेन ने जोरदार तर्क किया है और विकास को बादित कर सकता है, दुसरे शब्दो मे सषक्तिकरण विकास को गति दे सकता है।

शब्दकोशः शैक्षिक सषक्तिकरण, आर्थिक सषक्तिकरण, राजनीतिक सषक्तिकरण, भागीदारी।

प्रस्तावना

महिला सशक्तिकरण और शिक्षा :–

विकास प्रक्रिया में पूरी तरह से भाग लेने के लिए शिक्षा ज्ञान, कौशल और आत्मविश्वास के साथ महिलाओं को सशक्त बनाने का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। यह सभी के लिए ज्यादातर लड़कियों और महिलाओं के लिए जरूरी है क्योंकि यह अन्य अवसरों के लिए एक प्रवेश बिंदु है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा में निवेश से विशेष रूप से अधिक से अधिक लाभांश प्राप्त होता है। वर्तमान में 21वीं सदी में लड़के और लड़कियों की शिक्षा के मामले में कोई अंतर नहीं था। शिक्षित लड़कियां स्वास्थ्य देखभाल के महत्व और अपने बच्चों की जरूरतों को पहचान सकती हैं। भारत जैसे विकासशील देशों में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की साक्षरता दर कम है। अंततः महिलाओं को शिक्षित किया जाएगा तो अर्थव्यवस्था में स्थिति में सुधार होगा। जिससे वे अधिक संख्या में अवसरों का लाभ उठा सकते हैं और पहले की तुलना में अधिक मजबूत और शक्तिशाली बन सकते हैं।

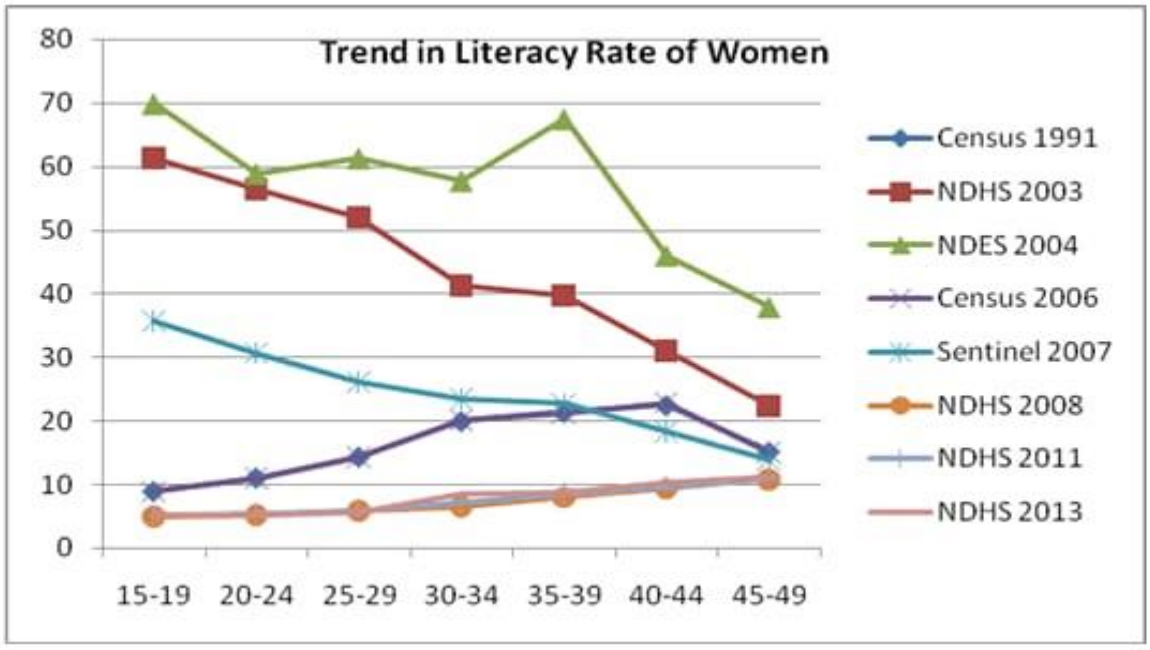

अध्ययन के उद्देश्य :–

- महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास के बीच संबंध का अध्ययन करना। महिला सशक्तिकरण और शिक्षा के बीच संबंधों की जांच करना।
- महिला सशक्तिकरण और गरीबी के स्तर के बीच संबंध को समझने के लिए।
- आज भारतीय महिलाओं के सामने आने वाली प्रमुख समस्याओं का पता लगाने के लिए।

अधिकारिता के प्रमुख प्रकार है :–

- शैक्षिक सषक्तिकरणः – जीवन मे प्रगति के लिए षिक्षा एक महत्वपूर्ण कारक है इसका अर्थ है ज्ञान के साथ महिलाओं को सषक्त बनाना कौषल विकास प्रक्रिया मे पुरी तरह से भाग लेने के लिए आवष्यक आत्मविष्वास इसका अर्थ है महिलाओं को उनके अधिकारो के बारे मे जागरूक करना और उन पर दावा करने के लिए आत्मविष्वास विकसित करना।

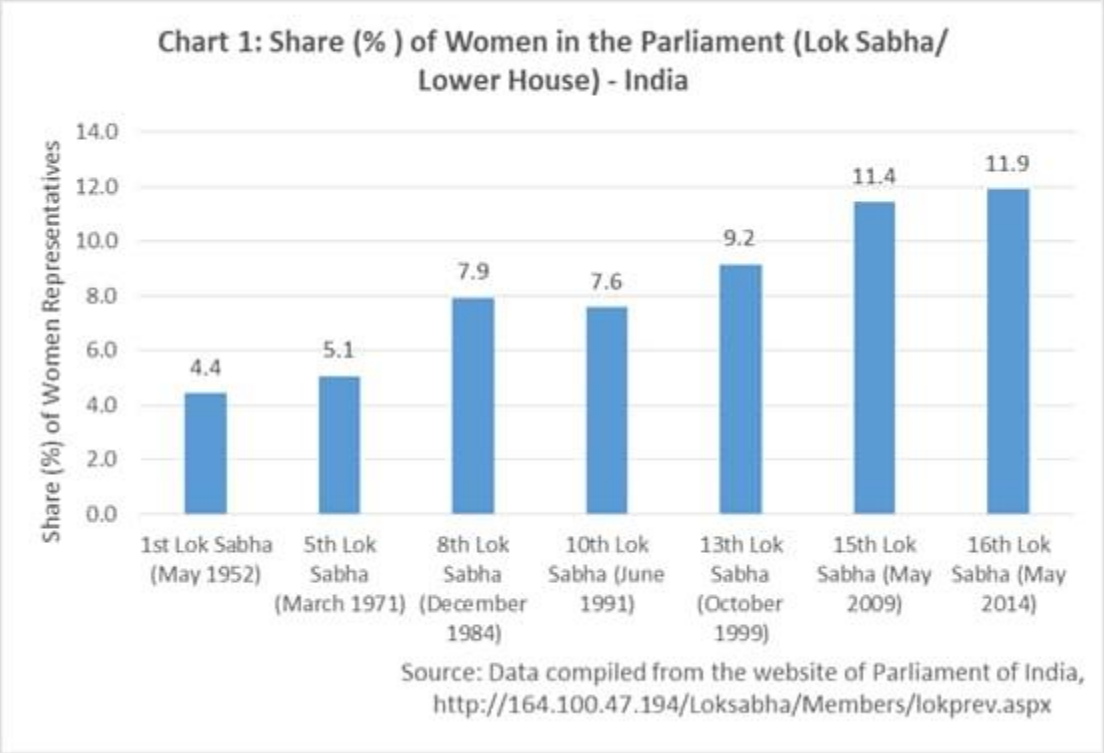

सामाजिक महिला सषक्तिकरण :–

महिलाओ के सामाजिक सषक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू लैंगिंक समानता का बढ़ावा देना है, महिलाओ को आज कई चुनौतियो का सामना करना पड़ता है चाहे वह अपने परिवार के लिए आय सुनिषचित करने के लिए साबुन और लाइंसेस बनाना हो।

- **आर्थिक सषक्तिकरणः** –इसका तात्पर्य महिलाओं के स्वामित्व और प्रबंधन वाली स्थायी आजिविका के लिए भौतिक जीवन की बेहतर गुणवता से है आर्थिक विकास और महिलाओं के कानुनी अधिकारो के बीच एक मजबुत संबंध है।
- **राजनीतिक सषक्तीकरणः**–अस्तित्व या राजनीतिक व्यवस्था राजनीतिक निर्णय की प्रक्रिया मे महिलाओ द्वारा भाग लेने के पक्ष मे है और साषन मे अन्य सरकारी नीतियो और निर्णयों को प्रभावित करते हुए ग्रामीणं समुदायों पर प्रभाव, शहर आधारित लोगो की मान्यताओं को बदलना, सरकार मे लोगो के साथ नेटवर्किंग करना और उद्योग और अन्य महिलाओं पर चर्चा करने के लिए और ग्रामीण समुदायो।

- **आर्थिक सषक्तीकरणः**–आर्थिक विकास और महिला सषक्तीकरण का द्विदिष संबंध है, जिसे महिलाओ के विकास के घटक तक पहुंचने की क्षमता के आयात के रूप मे परिभाषित किया गया है। महिलाओं के अधिकारो मे दिलचस्पी रखने वाली दुनिया आर्थिक विकास के पक्ष मे है।

भारतीय अर्थव्यवस्था महिलाऐं कई तरह से योगदान करती है। सामाजिक ढ़ांचे मे उनके महत्व के अलावा, हमारी संस्कृति की रक्षा करने और उपभोग के दृष्टिकोण को निर्धारित करने मे ग्रामीण केन्द्रित सामुदायिक तिक्षणता मे महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पुनः अर्थव्यवस्था के लिए विषेष बनाती है। उच्च वृद्धि के आंकड़ो भारतीय शत्रु का 8 से 9 प्रतिषत मूल रूप से उसके सकल घरेलू उत्पाद की उच्च दरो पर निर्भर करता है, जिसमे 70 प्रतिषत घरेलू

बचत, 20 प्रतिषत नीजि क्षैत्र और 10 प्रतिषत हॉम सार्वजनिक क्षैत्र मे आता है, देष मे हाउस हॉल्ड सेविंग सब महिलाओं की वजह से है क्योंकि ये भारतीय समाज की संस्कृति का एक हिस्सा बचत करना है।

बढ़ते वैष्वीकरण और अर्थव्यवस्था के उधारीकरण के साथ साथ सेवाओं के नीजिकरण मे वृद्धि के साथ, महिला 11 योजना के सषक्तिकरण रिपोर्ट स्वीकार करती है। पुरी तरह से महिलाऐ पीछे रह गयी है और सफलता का फल लेने मे सक्षम नही है। यज्ञपि भारत मे अधिकांष महिलाऐं किसी न किसी रूप मे काम करती है और अर्थव्यवस्था मे योगदान करती है महिलाऐं काम करते हुए खेतो की जुताई करती है और फसल काटती है और खेतो मे महिलाए बुनाई करती और उद्योगो मे काम करते हुए हस्तषिल्प बनाती है। अनौपचारिक क्षैत्र मे 90 प्रतिषत महिलाऐ शामिल है अनौपचारिक क्षैत्र मे घरेलू नौकर के छोटे व्यापारियो के लिए उपयुक्त नौकरिया शामिल है। हम समजत है कि भारतीय महिलाओ के योगदान को न तो उचित रूप से जिम्मेदार ठहराया गया है और न ही हमारे नीति निर्माताओं के पास अर्थव्यवस्था के विकास के लिए महत्व या महिलाओं तक पहुंचने की दृष्टि है।

महिला सषक्तिकरण और विकासः– भारत की महिलाओ ने या तो सदियो पुरानी दास्ता और पुरूष वर्चस्व की बेड़ियों को फैलाया है और अपने आप मे आ गयी है और गर्व व और सम्मान के साथ सामाजिक उन्नती को आगे बढ़ाना शुरू कर दिया है भारत मे महिलाओं को अब राजनीतिक, सामाजिक घरेलू और शैक्षिक सहित सभी जीवन गतिविधियों मे पुरूषों के साथ समान दर्जा दिया गया है। लेकिन फिर भी महिलाओं को गतिविधियों मे भाग लेने के लिए प्रेरित करने और प्रोत्साहित करने की आवष्यकता है क्योंकि महिलाऐं कुल आबादी मे सुरक्षित है। इसके लिए महिला सषक्तीकरण को देष के आर्थिक विकास मे महिलाओ को शामिल करने के लिए कुछ हस्तक्षेप की आवष्यकता है। विकास हस्तक्षेप जो महिलाओं की आय और भौतिक संपति सहित वास्तविक लिंग आवष्यकताओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जिससे महिला सषक्तीकरण मे वृद्धि होगी और गरीबी मे कमी आयेगी। इस हस्तक्षेप मे से महिला सषक्तीकरण शुरू होगा और हद तक आगे बढ़ेगा। कुछ नये हस्तक्षेप के कार्यवनन से महिला सषक्तीकरण मे वुद्धि की दर उल्लेखनीय रूप से बढ़ेगी। डुप्लो व्याख्या यह थी कि महिलाओं के अधिकारो और प्रतियक्ति सकल घरेलू उत्पाद या लागत लाभ गणना के बीच सकारात्मक सुधार हुआ था। इस नये बिंदु से यह स्पष्ट था कि महिला सषक्तीकरण मे वृद्धि से आर्थिक विकास मे वृद्धि हो सकती है।

आईएमएफ का अनुमान है कि कार्यबल मे महिलाओ की समान भागीदारी से भारत के सकल घरेलू उत्पाद मे 27 प्रतिषत की वृद्धि होगी, महिलाऐ अपने परिवारों पर 90 प्रतिषत आय खर्च करती है, और आर्थिक रूप से सषक्त महिलाऐं मांग को बढ़ावा देती है, स्वस्थ और बेहतर षिक्षित बच्चे और मानव विकास के स्तर को बढ़ाती है।

निष्कर्ष :–

सामाजिक, आर्थिक, सक्षित, राजनीतिक, और कानूनी रूप से महिलाओं को सषक्तीकरण एक कठिन कार्य होने जा रहा है। महिलाओं के प्रति अनादर की संस्कृति को बदलना आसान नही होगा केवल क्रांति एक दिन मे बदलाव ला सकती है, लेकिन सुधारों मे समय लगता है अर्थव्यवस्था मे महिलाओं को विषिष्ट स्थान है। यदि महिलाओं को आर्थिक मजबूती मिलती है तो वे निर्णय लेने की क्षमता और आय सर्जन की आय मे महिलाओं की प्रत्यक्ष भागीदारी महिला सषक्तीकरण दिषा में महत्वपूर्ण निरंतरता बनाती है, उद्यमिता महिलाओ को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने मे मदद कर सकती है जो उन्हे सुधार या आत्मा की स्थिति मे मदद कर सकती है

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. भारत सरकार (2021) मानव विकास रिपोर्ट। 2011: सामाजिक समावेष की ओर, ऑक्सफोर्ड
2. वर्ल्ड इकोनॉमिक्स फोरम (2012), द ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2012

3. खडंलेा, मानचन्द. (2002) महिला सशक्तिकरण, अरिहंत पब्लिशिंग हाउस,जयपुर।
4. मैथव, अब्राहम. (2005) राले ऑफ पचांयत इन वेलफयेर एडेमिनिस्ट्रेशन, कल्पज पब्लिकशेन
5. राजगुरू, इरादास. (2002) वमूने एजकूशेन इन राजस्थान, शाधेक, जयपुर।